International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 192-193

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 192-193
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-07-2020
Accepted: 17-08-2020

डॉ. अमरदीप कुमार चौधरी
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत विभाग, एस० एस० भी०, महाविद्यालय, कहलगॉव, ति० माँ. भागलपुर, वि. वि. भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अमरदीप कुमार चौधरी
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत विभाग, एस० एस० भी०, महाविद्यालय, कहलगॉव, ति० माँ. भागलपुर, वि. वि. भागलपुर, बिहार, भारत

प्रतिज्ञायौगन्धरायण में लोकोक्तिया और सूक्तिया

डॉ. अमरदीप कुमार चौधरी

प्रस्तावना
प्रतिज्ञायौगन्धरायण की भाषा नाटकों की भाषा के समान आदर्श भाषा है। वह भावों के सर्वथा अनुरूप है। उसमें कठिनता नाममात्र की भी नहीं है। सूत्रधार का वाक्य उनकी भाषा का आदर्श रूप माना जा सकता है –

''आर्ये! गीयतां तावद् किञ्चिद् वस्तु।
ततस्तव गीतप्रसादिते रंगे वयमपि प्रकरणमारभामहे।
आर्ये ! किमिदं चिन्त्यते। ननु गीयते''। [1]

कहीं कहीं पद्यों में भाषा समास बहुला अवश्य हो गई है, किन्तु उससे अर्थ की प्रतीति में कठिनता नहीं आती है। वैसे पद्यों में भी प्रायः मध्यमसमास भाषा का ही प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। इसमें शैली की दृष्टि से भी प्रस्तुत नाटक अत्यन्त सफल है। इसकी शैली में स्वाभाविकता अधिक है, कृत्रिमता की गन्ध नहीं है। भाषा अलंकारों के प्रयोग से भाराक्रान्त नहीं है। छोटे – छोटे लघु विस्तारी वाक्यों में बड़े से बड़े अर्थ को व्यक्त करना भाषा की शैली की महती विशेषता है। भास की शैली की विशिष्टता उनके संवादों, कथोप–कथनों में दृष्टिगत होती है। ये कथोपकथन बहुत संक्षिप्त, नपे तुले, चुटीले और प्रभावपूर्ण हैं यथा –

''भरत रोहकः–भो यौगन्धरायण।
यदग्निसाक्षिकं महासेनस्य दुहितरं–
शिष्यं प्रतिगृहय अदत्तापनयनं–
कृतम् युक्तेयं भोस्तस्करप्रवृत्तिः।

यौगन्धरायण – मा मा भवानेवम् विवाहः खल्वेष स्वामिनः। [2]
भास प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों अर्थों को एक साथ करने वाली नाटकीय शैली के प्रयोग में इतने दक्ष हैं कि इस क्षेत्र में उनका उपमेय ही दृष्टिगत नहीं होता। तृतीय अंक के प्रारम्भ की उन्मत्तक, श्रमणक और विदूषक का समस्त वार्तालाप इसी शैली में है। भास की शैली की अपर विशेषता उसमें स्थान स्थान पर लोकोक्तियों और सूक्तियों का प्रयोग है । यथा –

अदत्तेत्यागता लज्जा दत्तेति व्यथितं मनः।
धर्मस्नेहान्तरे न्यस्ता दुःखिता खलु मातरः।। [3]
अहः समुत्तीर्य निशा प्रतीक्ष्यते शुभे–
प्रभाते दिवसोऽनु चिन्त्यते।
अनागतार्थान्यशुभानि पश्यतां–
गतं गतं कालमवेक्ष्य निर्वृतिः।। [4]
एकस्य शाटिकया कार्यम परस्य मूल्येन–
कन्याया वरसम्पत्तिः पितुः प्रायः प्रयत्नतः। [5]
भाग्येषु शेषमायत्तं दृष्टपूर्वं न चान्यथा।। [6]
काष्ठादग्निर्जायते मथ्यमानाद्–
भूमिस्तोयं खन्यमाना ददाति।
सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणां–

मार्गारव्धाः सर्वयत्ना फलन्ति।। [7]
किं शक्यंकर्तुमन्तरेण विधानम्।
कुलं तावच्छ्लाध्यं .....परिपाल्या युवतयः।। [8]
कृतापराधस्य हि सत्कृतिर्वधः । [9]
जाग्रतोऽपि बलवत्तरः कृतान्तः।। [10]
तुल्येऽपि कालविशेषेषु निशैव बहुदोषा बन्धनेषु । [11]
देवमत्र कन्याप्रदानेऽधिकृतम् । [12]
दुहितः प्रदानकाले दुःखशीला हि मातरः । [13]
नवं शरावं सलिलैः ..... युद्धयेत्। [14]
नहयनारूह्य नागेन्द्रं वैजयन्ती निपात्यते। [15]
नीतेस्त्ने भाजने को निरोधः । [16]
परचक्रैरनाक्तान्ता..... परिरक्षति। [17]
पूर्वं ताबद् युद्ध ..... कार्यत एवं निवेद्यम् । [18]
प्रणिपतति निरूद्धः सत्कृतो धर्षितो वा
ब्रीलितो वत्र्वनं प्राप्य ..... प्रतिपद्यते।। [19]
व्यक्त बलं बहुच ..... कलत्रम्।। [20]
व्यवहारेष्वसाध्यानां ..... रजनीभयम्।। [21]
श्लाधनीयं भवेद्यदि लोको जानाति [22]
शक्ता दर्पयितुं ..... राजेति शब्दापनम् ।। [23]
समूलं वृक्षमुत्पाटय शाखाश्छेत्तुं कुतः श्रमः।। [24]
स्निघेष्वालज्यं ..... वर्धते वा ।। [25]
स्नुषा रज्यति पीता यदि। [26]

इन सूक्तियों के द्वारा भास ने भाषा को सुन्दरता प्रदान करने के साथ–साथ वक्तव्य अर्थ को भी अधिक ग्राहय, रूचिकर और स्पष्ट बना दिया है।
भास का अलंकार प्रयोग बहुत ही स्वाभाविक सामायिक और चित्ताकर्षक है।
कवि ने लगभग पन्द्रह छन्दों का प्रयोग किया ह जिनमें अनुष्टुप्, वसन्ततिलका तथा शार्दूलविक्रीडित पर कवि का विशेष अनुराग और अधिकार दृष्टिगत होता है।
प्राचीन रीतियों की दृष्टि से कवि ने भावानुसार वैदर्भी एवं पात्र्वाली रीतियों का सविशेष प्रयोग किया है। गौड़ीरीति का दर्शन यहाँ नहीं होता है। गुणों की दृष्टि से कवि ने माधुर्य और प्रसाद गुणों को निरूपण किया है। वृत्ति तो कैशिकी ही है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. प्रतिज्ञा० पृ० 4
2. प्रतिज्ञा० पृ० 156
3. प्रतिज्ञा० 2.7
4. प्रतिज्ञा० 3.2
5. प्रतिज्ञा० पृ० 102
6. प्रतिज्ञा० 2.5
7. प्रतिज्ञा० 1.18
8. प्रतिज्ञा० 2.4
9. प्रतिज्ञा० पृ० 22
10. प्रतिज्ञा० पृ० 22
11. प्रतिज्ञा० पृ०107
12. प्रतिज्ञा० पृ० 54
13. प्रतिज्ञा० पृ० 63
14. प्रतिज्ञा० 4.2
15. प्रतिज्ञा० 4.19
16. प्रतिज्ञा० 4.11
17. प्रतिज्ञा० 1.9
18. प्रतिज्ञा० 1.13
19. प्रतिज्ञा० 1.7
20. प्रतिज्ञा० 2.4
21. प्रतिज्ञा० 3.3
22. प्रतिज्ञा० पृ० 121
23. प्रतिज्ञा० 3.6
24. प्रतिज्ञा० 4.20
25. प्रतिज्ञा० 1.3
26. प्रतिज्ञा० पृ० 127